पाठ 21

सिखावन

(दोहा)

AHSP8S

–संकलित

सिखावन माने सीखे के बात या शिक्षा। ये पाठ म संकलित नौ ठन दोहा म कवि ह नौ ठन शिक्षा दे हवय। पहिली के सियान मन अपन जिनगी के अनुभव अपन पाछू के पीढ़ी ल सउप देवँय। इही किसम ले ज्ञान के भंडार ह भरत रहय। इही अनुभव अउ ज्ञान के बात सिखावन कहे जाय।

का होगे के रात हे, घपटे हे अँधियार ।
आसा अउ बिसवास के, चल तैं दीया बार।

एके अवगुन सौ गुन ल, मिलखी मारत खाय।
गुरतुर गुन वाला सुवा, लोभ करे फँद जाय।

मीठ–लबारी बोल के, लबरा पाये मान।
पन सतवंता ह सत्त बर,हाँसत तजे परान।

घाम – छाँव के खेल तो,होवत रहिथे रोज।
एकर संसो छोड़ के, रद्दा नावा तैं खोज।

लाखन – लाखन रंग के, फुलथे फूल मितान।
महर – महर जे नइ करे, फूल अबिरथा जान।

सब ला देथे फूल – फर,सब ला देथे छाँव।
अइसन दानी पेड़ के, परो निहरके पाँव।

तैं किताब के संग बद, गंगाबारू,मीत।
एकरे बल म दुनिया ल,पक्का लेबे जीत।

ठाड़े – ठाड़े नइ मिले,ठिहा ठिकाना – सार।
समुँद कोत नँदिया चले, दउड़त पल्ला मार।

हे उछाह मन म कहूँ , पाये बर कुछु ज्ञान।
का मनखे ? चाँटी घलो,पाही गुरु के मान।

छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ

का होगे	=	क्या हो गया,	मितान	=	मित्र
घपटना	=	सघनता के साथ छा जाना	महर–महर	=	सुगंध से महकना
अँधियार	=	अंधकार	नइ	=	नहीं
आसा	=	आशा	अबिरथा	=	बेकार
बिसवास	=	विश्वास	निहरके	=	झुककर
बारना	=	जलाना	बदना	=	(क्रिया)अनुष्ठान के साथ मानना (संज्ञा)मनौती
मिलखी मारत	=	पलक झपकते ही			
गुरतुर	=	मीठा			
फँद जाना	=	फँस जाना	एकरे	=	इसी का
लबारी	=	झूठ	पक्का	=	निश्चित
लबरा	=	झूठा	ठिहा–ठिकाना	=	मंजिल,गन्तव्य
सतवंता	=	सत्यवादी	सार	=	निचोड़
सत बर	=	सत्य के लिए	समुंद	=	समुद्र
परान	=	प्राण	कोत	=	तरफ,ओर
घाम	=	धूप	पल्ला मारना	=	तेज गति के साथ (दौड़ना)
संसो	=	चिन्ता			
रद्दा	=	रास्ता	उछाह	=	उत्साह
नवा	=	नया	चाँटी	=	चींटी
लाखन–लाखन	=	लाखों–लाख	घलो	=	भी

अभ्यास

पाठ से

1. हमन ला चाँटी ले का–का सिखावन मिलथे ओरिया के लिखव।
2. 'ठाढ़े–ठाढ़े ठिहा–ठिकाना नइ मिलय'–एमा कवि के भाव ल बने अरथा के लिखव ?
3. काकर बल म ये दुनिया ल जीते जा सकत हे, अउ 'दुनिया ल जीतना' के का अर्थ हे ?
4. पेड़ ल दानी काबर कहे गे हवय ?

5. 'घाम–छाँव के खेल' के अर्थ ल बने समझ के लिखव ?
6. 'रात' अउ 'अँधियार' के अर्थ कवि के अनुसार का हो सकत हे ?
7. 'आसा अउ बिसवास के दिया बारना' के भाव ल लिखव ।

पाठ से आगे

AI2KAF

1. एके अवगुन सौ गुन ल, मिलखी मारत खाय।

   गुरतुर गुल वाला सुवा, लोभ करे,फँद जाय ।।

   इसका संदर्भ क्या हो सकता है व इससे आप कहाँ तक सहमत है। विचार कर लिखिए।

3. जीवन बर आसा अउ बिसवास ल कवि ह जरूरी बताय हे। का तुमन घलव वइसने सोचथन बिचार करके लिखव।
4. नवा रद्दा खोजे ले जीवन म का–का परिवर्तन हो सकथे, अपन कक्षा के दू समूह बनाके सोचव अउ लिखव।
5. ''अगर दुनिया में किताब या किताब लिखइया नइ होतिन ता का होतिस।'' ए विषय में 10 लाइन लिखव।
6. सीख के अइसनेहे दोहा मन ल सकेल के लिखव।

भाषा से

AIBGC3

1. कविता अउ लेख के भाषा म बड़ अंतर होथे। कविता के भाषा अउ लेख के भाषा ल पढ़व अउ गुनव। कविता म शब्द भले कमती होथे,फेर ओकर अर्थ ह बड़े होथे। एमा कमती शब्द म बड़ गहरी बात ल कहे के उदिम कवि ह करे रहिथे। एकरे सेती कविता के शब्द म लुकाय भाव अउ विचार ल बने देखे अउ समझे ल परथे। एकर छोड़,कवि ह अपन भाषा ल गहना–गुरिया घलो पहिराथे,तेला 'अलंकार' कहे जाथे। जइसे–

   अ. आसा अउ बिसवास के दीया ।

   ब. गुरतुर–गुन ।

   पहिली डाँड़ ल पढ़व अउ गुनव। दिया ह माटी के बनथे,फेर कवि ह आसा अउ बिसवास के दिया बनाय हे। एकर माने,कवि ह आसा अउ बिसवास ल दिया के रूप दे हवय। ये ह 'रूपक' अलंकार के उदाहरण आय।

अब दुसरइया म दू शब्द के जोड़ी हवय–गुरतुर अउ गुन। दूनो शब्द के शुरू ह 'ग' अक्षर ले होय हे। अइसन प्रयोग ल 'अनुप्रास अलंकार' कहिथें।

अपन शिक्षक ले पूछके अउ आने–आने प्रयोग के बारे म जानव अउ लिखव, जइसे–

अ – लाखन–लाखन।

ब – ठाढ़े–ठाढ़े।

2. ये पाठ के कविता ह दोहा छंद म बँधाय हे। छंद माने बँधना। छंद ह कई प्रकार के होथे। कोनो छंद म 'मात्रा' के गिनती करे जाथे त कोनो छंद म 'वर्ण' के गिनती करे जाथे। जेमा 'मा़त्रा' के गिनती करे जाथे,तेला 'मात्रिक छंद' अउ जेमा 'वर्ण' के गिनती करे जाथे,तेला 'वार्णिक छंद' कहे जाथे।

दोहा ह अर्धसम मात्रिक–छंद आय। एकर चार चरण होथे। पहिली अउ तीसर चरण के 13–13 मात्रा के पाछू 'यति' होथे । दुसरइया अउ चौथइया चरण म 11–11 मात्रा होथे। सब मिला के 24–24 मात्रा होथे। मात्रा के गिनती ल 'गुरु' अउ 'लघु' ल समझ के करे जाथे 'गुरु' माने दू मात्रा अउ 'लघु' माने एक मात्रा। गुरु वर्ण के उच्चारण म जादा समय लागथे अउ लघु वर्ण के उच्चारण म कम समय लागथे। जेन वर्ण म कोनो मात्रा नइ रहय या 'इ' अउ 'उ' के मात्रा रहिथे,तेला 'लघु' या एक मात्रा माने जाथे। आने मात्रा वाला वर्ण ल दू मात्रा या 'गुरु' माने जाथे। गुरु के चिनहा 'ऽ' अउ लघु के चिनहा '।' जइसे होथे।

।।। ।।ऽ

उदाहरण– कमल, कमला

।। ऽ ऽऽऽ। ।।, ।। ऽ ऽऽऽ । = 13+11=24

सब ला देथे फूल–फर,सब ला देथे छाँव ।

।। ।। ऽऽ ऽ।ऽ,।ऽ ।।। ऽऽ। = 13+11=24

अइसन दानी पेड़ के,परो निहर के पाँव ।

पाठ म आय दू ठन दोहा ल लिखके मात्रा के गिनती करव ।

3. छत्तीसगढ़ी भाषा म गंज अकन मुहावरा के प्रयोग करे जाथे। एकर प्रयोग ले भाषा के प्रभाव के ताकत बढ़ जाथे अउ भाव म गहराई आ जाथे।

4. खाल्हे लिखाय मुहावरा मन ल अपन वाक्य म प्रयोग करव ।

   मिलखी मारना, मीठ लबारी बोलना, पल्ला मारना ।

5. उल्टा अर्थ वाला शब्द लिखव –

   अँधियार, आसा, लबरा, छाँव, जीत ।

6. जेन शब्द ह संज्ञा या सर्वनाम शब्द के विशेषता बताथे, तेला 'विशेषण' कहे जाथे। जइसे–'गुरतुर गुन'। एमा'गुन'के विशेषता बताय जावत हे। कइसन गुन हे ? ये प्रश्न के उत्तर हवे 'गुरतुर हे'। संज्ञा शब्द के साथ 'कइसे' या 'कइसन' के प्रश्न करे म 'विशेषण'शब्द के पता लग जाथे।

   पाठ के दोहा मन म आय 'विशेषण' शब्द ल छाँट के लिखव ।

7. पाठ म आय दोहा मन के संदेश उपर दस वाक्य लिखव ।

योग्यता विस्तार

1. पं. सुंदरलाल शर्मा के खंडकाव्य 'दानलीला' ल पढ़व। ओमा के दोहा ल याद करव ।
2. कबीर दास अउ तुलसी दास मन कइ ठन सिखावन दोहा लिखे हवँय। दूनो के सिखावन दोहा ल लिखव अउ याद करव ।

टिप्पणी

AIKCDQ

गंगाबारू अउ मीत– छत्तीसगढ़ म एक ठन अइसन परंपरा हे,जेहा आने जघा नइ मिलय,एहा मितानी के परंपरा आय । पारा–परोस के मनखे अउ नता–गोता वाला मनखे मन के आगू म पूजा–पाठ के सँग एक दूसर ल गंगा के बारू या बालू खवाके मितान बन जाथें। ये अइसन नता आय जेहा कई पीढ़ी तक चलथे। अइसने किसम के कई ठन मितानी – परंपरा छत्तीसगढ़ म हवय। जइसे – भोजली, जँवारा, महापरसाद बदे के पंरपरा।